Date: 20 जून 2023

गांधी शांति पुरस्कार

सिलेबस: जीएस 2 / पुरस्कार, जीएस 1 / महत्वपूर्ण व्यक्तित्व

संदर्भ-

- वर्ष 2021 का गांधी शांति पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली जूरी ने रविवार को सर्वसम्मति से वर्ष 2021 के गांधी शांति पुरस्कार के लिए गीता प्रेस, गोरखपुर का चयन किया।
- यह पुरस्कार अहिंसक और अन्य गांधीवादी तरीकों से सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

प्रमुख बिन्दु-

- वर्ष 1923 में स्थापित गीता प्रेस भगवद गीता, रामायण और उपनिषदों के **दुनिया के सबसे बड़े प्रकाशकों** में से एक है, जिसने 14 भाषाओं में 41.7 करोड़ पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें 16.21 करोड़ श्रीमद **भगवद गीता शामिल हैं।**
- इसकी स्थापना उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में हुई थी। 29 अप्रैल 1923 को जय दयाल गोयनका, घनश्याम दास जलान और हनुमान प्रसाद पोद्दार ने मिलकर इसकी स्थापना किया। **2023 में इसकी स्थापना के 100 साल पूरे हो रहे हैं।**
- यह गोरखपुर में**कल्याण चिकित्सालय** नामक एक धर्मार्थ चिकित्सालय भी चलाता है, जो **गरीबों और जरूरतमंदों को मुफ्त चिकित्सा सेवाएँ** प्रदान करता है।
- संस्था ने **राजस्व सृजन के लिए कभी भी अपने प्रकाशनों में विज्ञापन पर भरोसा नहीं किया है।**
- यहगीता प्रेस कल्याण नामक एक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित करता है, जिसमें आध्यात्मिकता, संस्कृति, इतिहास, और नैतिकता आदि विषयों को शामिल किया गया है।

गांधी शांति पुरस्कार-

- यह महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को श्रद्धांजलि के रूप में **महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के अवसर पर 1995** में भारत सरकार द्वारा स्थापित एक वार्षिक पुरस्कार **है।**

पात्रता:-

- यह अहिंसा और अन्य गांधीवादी तरीकों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में उनके योगदान के लिए व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाने वाला एक वार्षिक पुरस्कार है।

चयन:-

- यह पुरस्कार **राष्ट्रीयता, नस्ल, भाषा, जाति, पंथ या लिंग** की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए खुला है।
- इस पुरस्कार को**दो व्यक्तियों/संस्थानों के बीच विभाजित भी किया जा** सकता है, यदि चयनकर्त्ता यह मानते हैं कि वे दोनों समान रूप से पुरस्कार के योग्य हैं।

- किसी ऐसे व्यक्ति जिसका निधन हो चुका है, द्वारा किये गए कार्य पर पुरस्कार देने के लिये विचार नहीं जाएगा लेकिन प्रक्रिया संहिता में विनिर्दिष्ट तरीके से जूरी (प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में)को प्रस्ताव भेजे जाने के बाद यदि व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उसे मरणोपरांत पुरस्कार दिया जा सकता है।

पुरस्कार:-

- इस पुरस्कार में एक करोड़ रुपये की राशि, एक प्रशस्ति पत्र, एक पट्टिका और एक उत्कृष्ट पारंपरिक हस्तकला या एक हथकरघा वस्तु शामिल है।
- यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में एक समारोह में प्रदान किया जाता है।

पुरस्कार विजेता-

- पिछले पुरस्कार विजेताओं में इसरो, रामकृष्ण मिशन, बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक, विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी, अक्षय पात्र, बेंगलुरु, एकल अभियान ट्रस्ट, भारत और सुलभ इंटरनेशनल, नई दिल्ली जैसे संगठन शामिल हैं।
- कई अन्य हस्तियों के अलावा दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला और तंजानिया के पूर्व राष्ट्रपति जूलियस न्येरेरे जैसे दिग्गजों को भी प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
- कुछ हालिया पुरस्कार विजेताओं में ओमान के सुल्तान कबूस बिन सैद अल सैद (2019) और बांग्लादेश के बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान (2020) शामिल हैं।

चयन समिति:-

- जूरी की अध्यक्षता प्रधान मंत्री करते हैं और इसमें दो पदेन सदस्य होते हैं, अर्थात् भारत के मुख्य न्यायाधीश और लोकसभा में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के नेता।
- जूरी में दो प्रतिष्ठित सदस्य, लोकसभा अध्यक्ष और सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन के संस्थापक भी शामिल हैं।

स्रोत: TH

Rajiv Pandey

मियावाकी पद्धति

सिलेबस: जीएस 3 / कृषि, पर्यावरण

संदर्भ-

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में वृक्षारोपण की जापानी पद्धति मियावाकी का जिक्र किया।

मियावाकी वृक्षारोपण विधि के बारे में-

- यह एक छोटे से क्षेत्र में शहरी जंगलों को तेजी से बढ़ाने, घने और प्राकृतिक बनाने में मदद करता है बनाने की जापानी विधि है।
- यह वनरोपण की एक विशेष पद्धति है, जिसकी खोज**अकीरा मियावाकी नामक जापान के एक वनस्पतिशास्त्री** ने की थी। इसमें छोटे-छोटे स्थानों पर छोटे-छोटे पौधे रोपे जाते हैं, जो साधारण पौधों की तुलना में दस गुनी तेज़ी से बढ़ते हैं। और जंगल सामान्य से 30 गुना अधिक घने हो जाते हैं।
- जंगलों को पारंपरिक विधि से उगने में लगभग 200 से 300 वर्षों का समय लगता है, जबकि मियावाकी पद्धति से उन्हें केवल 20 से 30 वर्षों में ही उगाया जा सकता है।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

- वाणिज्यिक वानिकी के विपरीत, मियावाकी वानिकी में, विशिष्ट अनुपातों और अनुक्रमों में पौधों की केवल देशी किस्मों का ही चयन किया जाता है, जिससे 100 प्रतिशत स्व-टिकाऊ पारिस्थितिक तंत्र बनते हैं।
- इस प्रक्रिया में मिट्टी को गीली घास से ढका जाता है, जो सूखापन और कटाव को क्षेत्रों में लगाया जाता है। इस पद्धति में एक साथ कई अलग-अलग प्रकार के पेड़ लगाए जा सकते हैं, जो प्रजातियों के बीच एक संतुलित वातावरण बनाते हैं।
- यह एक पारिस्थितिक इंजीनियरिंग कार्य है जहां **देशी पौधों / पेड़ों** को वैज्ञानिक विधि में लगाया जाता है ताकि पौधों की तेजी से बढ़ती, घनी, विविध प्रजातियों की व्यवस्था बनाई जा सके।
- इस तकनीक में 2 फीट चौड़ी और 30 फीट लम्बी पट्टी में 100 से भी अधिक पौधे रोपे जा सकते हैं।
- पौधे पास-पास लगाने से उन पर मौसम की मार का विशेष असर नहीं पड़ता और गर्मियों के दिनों में भी पौधों के पत्ते हरे बने रहते हैं। पौधों की वृद्धि भी तेज़ गति से होती है।
- इन जंगलों के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ सामान्य स्वदेशी पौधों में **अंजन, अमला, बेल, अर्जुन और गंज** शामिल हैं।
- इस विधि में, **पेड़ आत्मनिर्भर हो जाते** हैं और वे तीन साल के भीतर अपनी पूरी लंबाई तक बढ़ जाते हैं।
- मियावाकी विधि में उपयोग किए जाने वाले पौधों **को नियमित रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है जैसे कि विनिर्माण और पानी देना**।

उपयोगिता-

- विगत कुछ वर्षों में, नगरपालिकाओं की सक्रियता तथा पर्यावरणविदों के अथक प्रयासों से मियावाकी वन परियोजनाएं पूरे देश में प्रसिद्ध हो रही हैं।
- तेलंगाना राज्य सरकार, घने वृक्षारोपण की 'यादाद्री' पद्धति (Yadadri' method) का प्रयोग कर रही है, जिसके कारण वारंगल में सकरात्मक परिणाम सामने आए हैं।
- इस क्रम में तमिलनाडु में, हरित योद्धा (green warriors) भी इस प्रकार के वन मॉडल को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं।
- स्वदेशी पेड़ों का घना हरा आवरण उस क्षेत्र के **धूल कणों को अवशोषित करने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जहां उद्यान स्थापित किया गया है।
- वे **पृथ्वी को गर्म करने वाले कार्बन डाइऑक्साइड को संग्रहीत करते हैं, वन्यजीवों को बनाए रखते हैं, पारिस्थितिक तंत्र** के **स्वास्थ्य में सुधार** करते हैं, और **रोजगार प्रदान** करते हैं।
- वे पक्षियों और कीड़ों के घर के रूप में कार्य करते **हैं और भूजल स्तर को बढ़ाते हैं।**
- ये वन नई जैव विविधता को प्रोत्साहित करते हैं और सतह के तापमान को नियंत्रित करते हैं।

आलोचना-

- आलोचकों का तर्क है कि विधि महंगी है, इसके लाभ अस्पष्ट हैं, और मियावाकी की तकनीक पारिस्थितिक बहाली के मौलिक सिद्धांतों का उल्लंघन करती है।
- विधि ने पौधों की संरचना, उपेक्षित देशी प्रजातियों और क्षेत्र की प्राकृतिक पारिस्थितिकी की अवहेलना होगी।
- यह जैव विविधता को कम करता है, प्रजातियों को विलुप्त होने के लिए प्रेरित करता है, और पारिस्थितिकी तंत्र लचीलापन में बाधा डालता है।

निष्कर्ष-

- उच्च सफलता दर के बावजूद, कई पारिस्थितिकीविदों को भारतीय जलवायु में इसकी स्थिरता के बारे में आपत्तियां हैं।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

- मियावाकी वनीकरण को नियमित वृक्षारोपण के प्रतिस्थापन के रूप में नहीं देखा जा सकता है और नगरपालिका अधिकारियों को नियमित ग्रीनिंग गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखना चाहिए।
- इस विचार के लिए नवागंतुकों को पारंपरिक वृक्षारोपण की तुलना में इसकी उच्च प्रारंभिक लागत के बारे में पता होना चाहिए।

स्त्रोत: इंडियन एक्स्प्रेस

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com